

महापच्चक्खाण पइण्णयं (फोल्डर नं. ११४०)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

स्व. श्री फतहलाल जी सा. हिंगर-उदयपुर – एक परिचय

विषयानुक्रम

भूमिका-----	१-५६
महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक-----	१
मंगल और अभिधेय – १-२-----	३
विविध प्रत्याख्यान – ३-५-----	३
सर्व जीव क्षमापना – ६-७-----	३
निन्दा, गर्हा और आलोचना – ८-----	५
ममत्व छेदन और आत्म-धर्म स्वरूप – ९-११-----	५
मूलगुण, उत्तरगुण की आराधना पूर्वक आत्मनिन्दा – १२-----	५
एकत्व भावना – १३-१६-----	५-७
संयोग सम्बन्ध परित्याग – १७-----	७
असंयम आदि की निन्दा और मिथ्यात्व का त्याग – १८-१९-----	७
अज्ञात अपराध आलोचना – २०-----	७
माया निहनन उपदेश – २१-----	७
आलोचक का स्वरूप और मोक्षगामित्व – २२-२३-----	९
शल्योद्धरण प्ररूपणा – २४-२९-----	९
आलोचना फल – ३०-----	९
प्रायश्चित अनुसरण प्ररूपणा – ३१-३२-----	११
प्राण-हिंसा आदि का प्रत्याख्यान और असण आदि का परित्याग – ३३-३४-----	११
निर्दोष पालन, भाव शुद्ध और प्रत्याख्यान स्वरूप – ३५-३६-----	११
वैराग्य उपदेश – ३७-४०-----	११-१३
पंडितमरण प्ररूपणा – ४१-५०-----	१३
निर्वेद उपदेश – ५१-६७-----	१३-१७
पंच महाव्रत रक्षा प्ररूपणा – ६८-७६-----	१७-१९
गुप्ति समिति प्रधान प्ररूपणा – ७७-----	१९
तप माहात्म्य – ७८-७९-----	१९
आत्मार्थ साधन प्ररूपणा – ८०-८४-----	२१
अकृत योग और कृत योग के गुणदोष की प्ररूपणा – ८५-८९-----	२१
पंडितमरण प्ररूपणा – ९०-९२-----	२३
अनआराधक स्वरूप – ९३-९४-----	२३

आराधन माहात्म्य – ९५ -----	२३
विशुद्ध मन प्राधान्य – ९६ -----	२३
प्रमाद दोष प्ररूपणा – ९७-९८ -----	२३-२५
संवर माहात्म्य – ९९-१०० -----	२५
ज्ञान-प्राधान्य प्ररूपणा – १०१-१०६ -----	२५-२७
जिनधर्म में श्रद्धा – १०७ -----	२७
विविध त्याग प्ररूपणा – १०८-११० -----	२७
प्रत्याख्यान से समाधि प्राप्ति – १११-११२ -----	२७
अरंहत आदि एक पद के शरण ग्रहण एवं प्रत्याख्यान करने से आराधकत्व – ११३-१२० -----	२७-२९
वेदना सहन का उपदेश – १२१-१२५ -----	२९
अभ्युद्यतमरण प्ररूपणा – १२६-१२७ -----	३१
आराधना पताका प्राप्ति प्ररूपणा – १२८-१३४ -----	३१
संसारतन और कर्म निस्तारण उपदेश – १३५-१३६ -----	३३
आराधना के भेद और उसके फल – १३७-१३९ -----	३३
सर्व जीव क्षमापना – १४० -----	३३
धीरमरण प्रशंसा – १४१ -----	३३
प्रत्याख्यान पालन का फल – १४२ -----	३३
परिशिष्ट	
(१) महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक में प्रयुक्त विशिष्ट शब्द -----	३४-४२
(२) महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक की गाथानुक्रमणिका -----	४३-४५
(३) सहायक ग्रन्थ सूची -----	४६-४७